विधान - विभव

रचयिता

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य विभवसागर

विधान - विभव

रचयिता

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य विभवसागर

संपादन

अर्हं श्री माता जी

प्रकाशक

आचार्य विभवसागर श्रुत संस्थान

जयपुर (राजस्थान)

कृति	:	**विधान विभव**
सृजेता	:	**सारस्वत कवि श्रमणाचार्य विभवसागर**
संस्करण	:	प्रथम (1000 प्रतियाँ)
अवसर	:	वर्ष 2014 पावन वर्षायोग मोराजी-सागर
लागत राशि	:	क्षमा पर्व 9 सितम्बर, 2014 वर्णी भवन,विधान प्रतिज्ञा
सौजन्य	:	♦ श्री उमेश कुमार जैन (चाँदी वाले) श्रीमती बबीता जैन बाहुबली कॉलोनी, सागर (म.प्र.) संपर्क : 09425171709, 09425655823 ♦ श्री कपूर चन्द जैन (लागौन वाले) श्रीमती कमला जैन 72. तालाबपुरा, ललितपुर (उ.प्र.) संपर्क 09452330063
प्राप्ति स्थल	:	आचार्य श्री विभवसागर श्रुत संस्थान 126 सी, अर्जुन साउथ, गोपालपुर बाईपास, जयपुर (राजस्थान) सौरभ जैन (09829178749) आशीष जैन (9460066534) सुनील जैन (7891841644) जैन चश्माघर, परकोटा बनवे रोड, सागर (म.प्र.). (9425462997)
विशेष जानकारी	:	www.vibhavsagar.com www.facebook.com/acharyashree108vibhavsagarjimaharaj E-mail : acharyashree@vibhavsagar.com
मुद्रक	:	

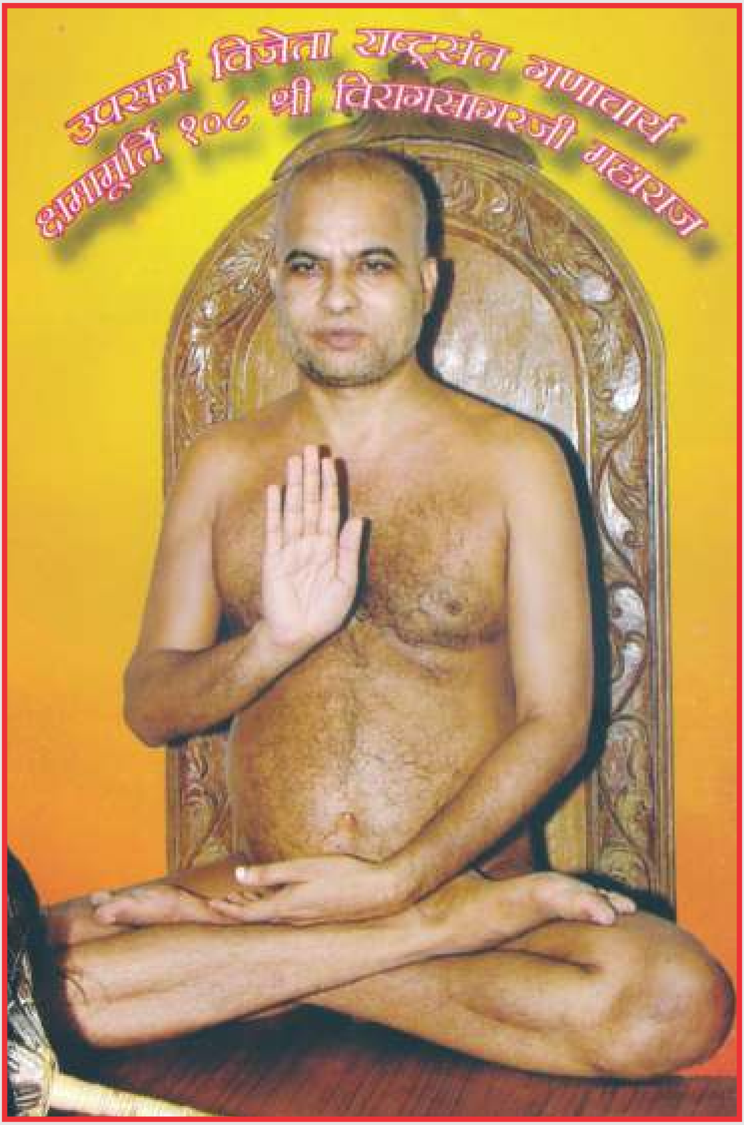

प.पू. गणाचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज

श्रमणाचार्य 108 श्री विभवसागरजी महाराज

आचार्य श्री का जीवन परिचय

पूर्वनाम	:	पं. अशोक कुमार जैन ''शास्त्री''
जन्म	:	23.10.1976 को, प्रकाशित अमावश्या, दीपावली
स्थान	:	किशनपुरा (सागर)
माताश्री	:	श्राविका-रत्न श्रीमती गुलाबबाई जैन
पिताश्री	:	श्रावक रत्न श्री लखमीचन्द्र जैन
शिक्षा	:	इण्टर संस्कृत शास्त्री प्रथमवर्ष
धार्मिक शिक्षा	:	धर्मशास्त्री द्वितीय वर्ष
शिक्षण संस्थान	:	श्री गणेशप्रसाद वर्णी दि. जैन महाविद्यालय, मोराजी, सागर (म.प्र.) वैराग्य एवं व्रत प्रतिमा 9 अक्टूबर 1994 को ब्रह्मचर्य व्रत लिया, बीना
झुल्लक दीक्षा	:	28 जनवरी 1996, देवेन्द्र नगर, पन्ना (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	:	23.02.1997, अतिशय क्षेत्र वरासौं, भिण्ड (म.प्र.)
मुनि दीक्षा	:	14.12.1998, अतिशय क्षेत्र वरासी, भिण्ड (म.प्र.)
दीक्षागुरु	:	गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज
आचार्यपद	:	31 मार्च 2007, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) महावीर जयंती के पावन अवसर पर
विशेष	:	जैन आगम रूपी मानसरोवर के राजहंस की तरह झलक देने वाले प्रज्ञा श्रमण की प्रवचन शैली जन-जन द्वारा हृदय ग्राह्य है।
अलंकरण	:	'सारस्वत श्रमण' एवं 'सारस्वत कवि' जबलपुर में 2009
रुचि	:	पठन-पाठन, काव्य सृजन, चिंतन, मनन
कृतियां	:	अभी तक आचार्य श्री द्वारा 60 कृतियों की सर्जना की गई है जो इसी पुस्तक में सूचीबद्ध हैं।

१०८ श्री विभवसागरजी महाराज के संघस्थ
संघस्थ साधुगण

श्रमण आचरण सागर जी
क्षु. अध्यायन सागर जी
क्षु. अध्यापन सागर जी
क्षु. अध्यापन सागर जी
क्षु. आवश्यक सागर जी
क्षु. अर्हन्त सागर जी

क्षु. ओम् श्री
क्षु. अर्हं श्री
क्षु. अहिंसा श्री
ब्रती. ब्र. भैया कमलेश जी
ब्रती. ब्र. भैया नितिन जी
ब्रती. ब्र. बहिन प्रिया दीदी
ब्र. बहिन मंजू दीदी

पुण्यार्जक

आचार्य श्री विभवसागर श्रमण श्रुत सेवा संस्थान

सौरभ जैन, संस्थापक एवं अध्यक्ष
जयपुर

शिरोमणी संरक्षक

श्री दीपक जैन, शिकागों
श्री चक्रेश जैन (बरकटनगर), जयपुर
श्री सुनील जैन, जयपुर
श्री उमेश कुमार जैन, श्रीमती बबीता जैन, सागर
श्री इन्द्रकुमार जैन, जयपुर, अशोका इलेक्ट्रीकल्स
श्री चम्पालाल जैन, नौडरकला, ललितपुर
श्री स्वतंत्र जैन, प्रिन्स जैन, ललितपुर
श्री आशीष जैन, जयपुर

परम संरक्षक

श्री नेमीचन्द जैन, निवाई
श्री सत्यनारायण जैन, निवाई
श्री बाबूलाल जैन, कोटा
श्री टी. के. बंद, इन्दौर
श्री कपूरचंद्र जी लागौन, ललितपुर
श्री पचन झाँझरी, परभणी
श्री कांतिलाल महाजन, परभणी
श्री हेमन्त शाह, बीना
श्री राजेन्द्र जी पोतदार, टीकमेड
श्री नरेन्द्र कुमार, राजेश कुमार जैन
बिरथा ललितपुर
श्री सन्मति जैन, चश्माधर सागर

सदस्य

कल्पना जैन, जबलपुर
सुशील जैन, जयपुर
श्री रजनीश जैन, चीचली
श्री प्रदीप जासनो, परभणी
श्री डॉ. डी. के. जैन, अशोकनगर
डॉ. सगुनचंद्र जैन, अशोकनगर
श्री हेमकुमार जैन, हटा
श्री विनोद कुमार जैन, बरायठा

श्री शिखर चंद्र जैन, भोपाल
श्री अरविन्द जैन, दूध वाले, भोपाल
श्रो विमलकुमार जैन, अशोकनगर
श्री बाबूलाल अरूण कुमार
साइकिल डीलर ललित कुमार
श्री विनोद कुमार जैन, मेडीकल, अशेकनगर
श्रओ भानु जैन, बसंत बिहार, कोटा
श्री अनिल जैन प्राचार्य, दांड

प्रस्तावना

– सारस्वत कवि श्रमणाचार्य विभव सागर

आत्मसाधना का लक्ष्य लेकर मोक्षमार्ग पर अग्रसर हुआ काव्य रुचि ने साहित्य साधना में प्रवेश ही नहीं कराया अपितु सफलता और सुयश प्रदान करते हुए माँ जिन भारती के श्री चरणों में अक्षर अर्थ समर्पण करने का अवसर दिया।

लगन मजबूत हो, प्रयास निरन्तर हो, कार्य शुभ हो, लक्ष्य प्रशस्त हो, और गुरु का आशीर्वाद रहे तो अनुकूल लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

अंतर आत्मा के भावों को कलम के सहारे कागज पर उतार देना आसान कार्य नहीं, क्योंकि जिनवाणी के एक-एक अक्षर लिखने के लिए महापुण्य चाहिए। मैं कलम को कलम नहीं अभिषेक का कलश मानता हूँ। कापी (कागज) को अभिषेक की बाली मानता है। लिखे जाने वाले अक्षर-अक्षर को भगवान मानकर स्थापित करता जाता है। फल स्वरूप अक्षरों से शब्द, शब्दों से पद, पदों से वाक्य, वाक्य से अर्थ निर्णय, अर्थ निर्णय से तत्वज्ञान, तत्व ज्ञान से आत्मकल्याण होता है।

मेरी रचना शीलवती स्त्री की तरह बिना किसी अलंकार के ही शोभा देती हैं अतः मुझे न तो अलंकार से प्रयोजन, न रस से। क्योंकि शान्त रस रसराज रस है मैं प्रायः आत्म आराधना के उद्धेश्य से शान्त भाव से अपने आराध्य की आराधना में जो कुछ भी गुनगुनाता हूँ, या जब कभी अपनी बात सुनाता हूँ, बस वही बात कविता, काव्य, पूजा, वंदना, स्तुति, विधान बनकर तैयार हो जाती है।

सन् 1997 में मेरी प्रथम रचना आचार्य विराग सागर गुरु पूजा, तथा आचार्य परमेष्ठी के 36 मूलगुणों की आराधना में रचित अमृतगीता प्रकाशित हुई, तब से अब तक साहित्य साधन मार्ग में कलम और मोक्षमार्ग पर कदम अग्रसर....।

भक्तामर स्तोत्र पर रचित गीता मुझे प्रेरणास्पद रही। कल्याण मंदिर गीता प्रेरणा का फल है। जिसमें भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की आराधना कर पार्श्वनाथ विधान नाम दिया।

2003 नागपुर वर्षायोग में पं. आशाधर प्रणीत संस्कृत रत्नत्रय विधान की जयमाला में समाहित स्वयंभूस्तोत्र के आधार से तीर्थंकर विधान की रचना हुई। इसी वर्षायोग में एकीभाव स्तोत्र का भावानुवाद किया। जो एकीभाव विधान में सम्मिलित है।

2005 में भुट्टारक स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी की प्रार्थना एवं प्रेरणा से गोम्टेश श्रवणबेलगोला में गोम्टेश बाहुबली विधान की रचना हुई। इसी क्षेत्र पर श्री भद्रबाहु के पाद पंकजों में कालजयी रचना ''तेरी छत्रच्छाया'' समाधि भक्ति रची।

2008 में द्रोणगिरि वर्षायोग में द्रोणगिरि विधान रचा। अतिशय क्षेत्र नवागढ़ विधान में अरनाथ पूजा एवं विधान सृजन हुआ तथा 2009 से 2010 तक शान्ति विधान रचना स्वाध्याय के आधार पर होती रही। फलस्वरूप विविध विधान प्रतिष्ठाचार्य ब्र.पं. जयकुमार जी निशांत के प्रयास से संकलित होकर एक साथ प्रकाशित हो रहे हैं। एतदर्थ उन्हें शुभाशीष। संघस्थ श्रमण आचरणसागर, अमृतसागर आदि तथा संघस्थ माताजी ओम् श्री अहंश्री एवं प्रिया दीदी के साहित्य सहयोग से कृति ''विधान विभव'' एक पुस्तकाकार ले सकी।

सूर्य का कार्य कमलों को खिला देना है, पवन का कार्य खुशबू बिखेर देना है तथा मैंने तो अपना कार्य कर लिया, पर इस साहित्य साधना की खुशबू को आप तक पहुँचाने जिन दानवीर महानुभावों का योग बना उन्हें शुभाशीष। प्रत्यक्ष एवं परोक्ष में जिन भव्यात्माओं का सहयोग मिला उन्हें आभार आर्शीवाद तथा मनोहर लाल जैन दीप प्रिन्टर्स, नई दिल्ली, जिन्होंने इस कृति को सुन्दर रूप सजाकर प्रकाशित किया। अन्त में मेरे दीक्षा गुरु विरागसागर जी महाराज को नमोस्तु.... ॐ नमः

श्रमणाचार्य विभव सागर

शुभ भावना

विलक्षण प्रज्ञा पूर्व जन्म की सौगात है, जिसे वर्तमान पुरुषार्थ से सजाया-सवारा जाता है तो वह विभिन्न आयामों में ढल जाती है। मानव चाहे ती प्रज्ञा से संसार बढ़ा सकता है या चाहे तो संसार घटा सकता है। प्रज्ञा का सदुपयोग जहाँ विकास के शिखर पहुंचाता है, वहीं उसका दुरुपयोग विनाश के रसातल पर भी पहुँचा सकता है।

प्रज्ञा पुरुष इसकी तीक्ष्णता से कर्म जंजीर काटने एवं अज्ञान तिमिर को तिरोहित करने का सम्यक पुरुषार्थ कर अपनी पर्याय को धन्य कर लेते हैं। ऐसे ही च. अशोक कुमार-किशनपुरा हैं, जिन्होंने अल्पवय में ही संसार की नश्वरता, क्षणभंगुरता को पहचान कर संयम एवं वैराग्य को धारण करके आत्म कल्याण की ओर अग्रसर होने का संकल्प किया साधना की सीढ़ियाँ चढ़ते चढ़ते तपश्चरण के साथ-साथ भक्ति गंगा भी निर्धारित होने लगी। माँ सरस्वती की दिव्याभा आपके मनोमस्तिक को आलोकित करने लगी, आपके चिंतन एवं लयबद्धता के विलक्षण प्रभाव से सृजित काव्य रचनाएँ जन-जन के मुखारबिंदो का आधार बन गयीं। तेरी छत्र छाया भगवन...... जिनवाणी रसपान करूँ मैं....... दर्शन पात....... के साथ पूजा विधानों की सरलता, सरसता एवं भक्तिभाव को जागृत करने वाले शब्दों ने भक्तों को प्रभु भक्ति करने की अभूतपूर्व प्रेरणा दी।

विलक्षण प्रज्ञा और माँ जिनवाणी की कृपा ऐसी हुई कि चंद दिनों में ही भक्तिभाव से ओत-प्रोत विधान का सृजन भिन्न-भिन्न लयबद्ध छंदों में भक्तों की भावना प्रभु चरणों में समर्पित करने के लिए सृजित हो जाता है।

पद विहार करते विभिन्न क्षेत्रों की बंदना करते हुए श्रवणबेलगोला से बुन्देलखण्ड की यात्रा के दौरान कई पूजा, विधान भक्ति, विभिन्न

पाठों का सृजन एवं पद्यानुवाद कर माँ जिनवाणी के अक्षयकोष को वृद्धिंगत कर रहे हैं।

आपकी सहजता, सरलंता, भक्ति एवं समर्पण आपके शब्द-शब्द में प्रगट होता है अतिशयकारी बिम्बों के दर्शन करते-करते भगवत् भक्ति की हिलोरें। लहरें जब जब तरंगयित होती हैं मनः मस्तिष्क से भक्ति गंगा शब्द रूप में प्रस्फुटित होकर कब काव्य का रूप धारण कर लेती है, आपको स्वयं आभास नहीं होता है। इसका साक्षात् प्रमाण नवागढ़ क्षेत्र के अरनाथ स्वामी एवं अरनाथ विधान है।

आपकी काव्य साहित्य की प्रतिभा के साथ, प्रवचन कला भी ऐसी विलक्षण है जो रागी को वैराग्य की ओर, वैरागी को संयम की ओर, संयमी की तपश्चरण की ओर आकर्षित करके उत्तरोतर ऊपर उठने का मार्ग प्रशस्त करती है। आपमें पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से अनुरंजित युवामन को वैराग्य की ओर मोड़ने की कल्पनातीत क्षमता है यही कारण है आपके बरद हस्तों से विलक्षण जीवंत कृतियों का सृजन भी अद्भुत है।

इस कृति का प्रत्येक विधान अनुष्ठानकर्ता को आराध्य का साक्षात् दर्शन कराकर उसके अशुभ, अमंगल को दूरकर संयम धर्माचरण के द्वार खोल देता है। जिससे उसका जीवन भी पावन पवित्र होकर कर्मावरण हटाकर परमात्म सत्ता को प्रकट करने में सक्षम हो जाता है।

आचार्य श्री के यह भाव भक्तों की भक्ति हेतु सतत् नित नये विधान स्त्रजित कर उनको मुक्ति पथ का राही बनाने में सहयोगी बनते रहें, यही भावना कामना है सादर नमोऽस्तु चरण वंदन...।

क्षमापर्व 2014

ब्र. जयकुमार जैन निशांत
पुष्प भवन, टीकमगढ़

अनुक्रमणिका

विषय पेज सं.